

raha Maç. 7, 7 in Verz. d. B. H. 73. — 2) f. ई die Tochter des Gāhnu, Bein. der Gaṅgā H. 1081. MBh. 3, 8211. 5, 3969. BHAG. 10, 31. HARIV. 1421. 1761. R. 1, 44, 39. 3, 2, 11. PAÑKĀT. 79, 14. 188, 14. HIT. Pr. 1. VP. 398. VID. 5. RĀGĀ-TAR. 3, 47. 4, 146. जाङ्गवि dem Versmaass zu Liebe MBh. 13, 7680.

जाङ्गवीय (von जाङ्गवी) adj. der Gaṅgā gehörig, sie betreffend u. s. w.: श्रौघा: RAGH. 10, 27. गुणा: MBh. 13, 1857.

1. जि, जियति und ऽते (insbes. mit परा und वि): (परा) जय्यात् MBh. 4, 1604; श्रौघीत्, ved. जेषत्, जेषत्, जेष्म, जेषाम, (सम्) जेषीत्, जेषी, 2. sg. med., श्रौघे (परजिष्ट MBh. 1, 6378), श्रौघीजयत् MBh. 7, 2280. 2339; जिगीय P. 7, 3, 57. VOP. 8, 73. जिग्रेथ, जिग्युस्, जिगीवन्, जिग्युषस्, med. जिग्ये; पराजयामास HARIV. 13946; जेष्यति (जयिष्यसि R. 1, 29, 3), ऽते (पराजयिष्यते MBh. 7, 3860); जेता; inf. जिषे RV. 1, 111, 4. 112, 12. जेतवे TBa. 2, 4, 2. pass. जीयते, श्रौघायि, जायिष्यते; जित. Duātup. 13, 53. 22, 48. 1) Etwas gewinnen, ersiegen, erbeuten (im Kampfe, Spiele), erwerben; sich unterwerfen, erobern: स्वर्वतीर्य एना जयेम RV. 5, 2, 11. 1, 80, 3. 8, 40, 10. त्वया जेष्म कृतं धनम् 6, 45, 12. 15. श्राजिम् 1, 179, 3. 6, 35, 2. पतना: 8, 34, 4. वाजं जेषे श्रौघे वृहत् 9, 44, 6. गा: सोमम् 1, 32, 12. योनिम् वधम् 10, 107, 9. संघातम् VS. 1, 16. विद्या श्राशो: 18, 33. AV. 8, 3, 3. स्व: 10, 6, 13. 7, 110, 2. लोकान् 9, 1, 23. 6, 62. M. 4, 181. 246. 9, 137. MBh. 13, 5806. 3, 2751. R. 1, 57, 5. 3, 9, 25. Buāg. P. 4, 21, 45 (med.). पन्थानम् AV. 12, 1, 47. देवनेत्रं वै तत्र वै तन्मर्त्यो जेतुमर्हति AIT. Br. 8, 23. यो यज्जयति तस्य तत् was Jmd erbeutet, das gehört ihm M. 7, 96. मा नो जेषुरिदं धनम् (im Spiele) AV. 4, 38, 3. दुर्षोधनो जैपदि त्वामशेषीत् MBh. 2, 2201. तयात्मानं पुनर्जय 2172. सर्वमन्यज्जितं मया 3, 2229. यत्र यतिं स्रोत्यास्तज्जितं ते AV. 6, 98, 3. ÇAT. Br. 3, 6, 2, 3. जितम् 1, 6, 2, 1. 4, 6, 8, 18. जिगाय सेनया — पुरं पौरवर्त्तितम् MBh. 2, 1024. सर्वा मर्हो जेतुम् SUND. 2, 9. VID. 337. ÇĀK. 192. श्रौघीयत — ततो मर्हो RAGH. 11, 65. — 2) Jmd besiegen, überwinden, übertreffen, überflügeln: शत्रून् VS. 5, 37. RV. 3, 54, 22. 5, 45, 6. AV. 11, 9, 18. पूरुम् RV. 7, 18, 13. पणान् AV. 4, 23, 5. 1, 24, 1. ÇAT. Br. 11, 6, 2, 5. M. 4, 174. MBh. 2, 2474. 3, 1927. 4, 686. न त्वा रामो रणो जेता 5, 7257. BHAG. 2, 6. 11, 34. R. 1, 23, 18. जयति तुलामध्वजे भास्वानपि जलदपटलानि PAÑKĀT. 1, 375. य: पार्थिवानेकार्थेन जिग्ये MBh. 3, 10255. BHAG. P. 6, 7, 40. जयते शत्रून् MBh. 3, 15193. जेष्यसे 15854. जयस्व HARIV. 5421. जयतां राघव: संख्ये रावणाम् R. 6, 92, 20. स जीयते रणे कथम् MBh. 1, 7506. न जयियम् 7, 2702. तैरजेषत सैन्यानि BHATT. 15, 76. केन जायिष्यते यम: 16, 2. जेष्यमाण 12, 77. सर्वा दण्डजितो लोक: M. 7, 22. ऐलं त्वं बुद्ध्या जयसि MBh. 2, 2576. शत्र्या जयसि राज्ञो ऽन्यान्धीन्धर्मोपसेवया 2577. INDR. 5, 55. जयिय केन कविना यमके: GHAT. 22. वपु:प्रकर्षादजयद्गुरुम् RAGH. 3, 34. गर्जितानक्षरं वृष्टिं सौभाग्येन जिगाय सा (गो:) KUMĀRAS. 2, 53. तासामिव स्तनयुगजिता: कुम्भिन: सन्ति मत्ता: ÇRṅGĀRAT. 17. मदेह्यसङ्घजितकामकार्मुका ÇAUT. 33. ततो जिततर: परै: MBh. 10, 555. im Spiele besiegen: द्यूतेन तान् जय MBh. 3, 299. 2258. जयस्वैनम् 2, 2058. जीयते 3, 2262. 2271. 2285. स्त्रीजित von einem Weibe besiegt, in der Gewalt eines Weibes stehend M. 4, 217. JĀGĀ. 1, 163. HARIV. 7308. भार्याजित dass. 7328. besiegen in astrol. Sinne VARĀH. BRH. S. 17, 11. 14. fgg. LAGHUG. 5, 3. SŪRAS. 1, 25. 7, 20. Jmd im Process besiegen, seiner Schuld überführen: यो मन्येतजितो ऽस्मीति न्यायेन पराजित: । तमायातं पुनर्जिता

दापयेद्दिगुणं दम्म् ॥ JĀGĀ. 2, 306. die Sinne, Leidenschaften, Leiden, Krankheiten u. s. w. besiegen, überwinden, abwenden, ihrer Herr werden: जितेन्द्रिय H. 811. M. 2, 98. 70. 6, 34. 7, 44. R. 1, 57, 10. जितात्मन् SUND. 3, 2. PAÑKĀT. 131, 19. श्रजितात्मन् M. 7, 34. यस्मिन् (मनासि) जिते जितवितौ भवत: पञ्चकौ गणौ 2, 92. जयेह्येभम् 7, 49. जितक्रोध 8, 173. R. 1, 1, 4. 14. 3, 6, 21. प्रागजियत घृणा RAGH. 11, 65. जितशिष्नेद्र MBh. 13, 5341. जितासनो जितश्वास: जितसङ्गो जितेन्द्रिय: Buāg. P. 2, 1, 23. 1, 13, 51. जितक्लम MBh. 1, 5925. HIP. 1, 52. मासेन जेतुं शक्यो व्याधि: P. 5, 1, 93. Sch. उत दु:खं जयेदज्ञ: VOP. 23, 16. एतेन वै सो ऽभिशास्तीरजयत् KĀT. 19, 12 in Ind. St. 3, 478. एभिर्जितै: (विवादै:) aufgegeben M. 4, 181. बालावपि जितश्रमा die die Uebungen überwinden haben, denen die Uebungen keine Mühe mehr machen HARIV. 4344. जितान्तर (लेखक) der mit Leichtigkeit liest KĀN. 104. — 3) Jmd siegreich vertreiben aus (abl.): तत्सदसो जिग्यु: ÇAT. Br. 3, 6, 1, 17. — 4) Jmd um Etwas bringen, in Etwas besiegen, Jmd Etwas im Spiele abnehmen; mit doppeltem acc.: तानप्यर्धमाग्नीध्रस्य जिग्यु: ÇAT. Br. 3, 6, 1, 28. न वै पुष्पाकामिं कश्चिद्ब्रह्मोद्यं जेता 14, 6, 8, 1. 12. देवने कुशलैर्जिज्ञैर्जितो राव्यं वसूनि च MBh. 3, 2483. 2258. DAÇAK. in BENF. Chr. 186, 3. SIDDH. K. zu P. 1, 4, 51. VOP. 5, 6. — 5) ohne obj. siegen, siegreich sein, den Sieg davontragen (im Kampfe u. s. w.), gewinnen (im Spiele): जेषमेन्द्र त्वया युजा RV. 8, 52, 11. समिधे 9, 76, 5. श्रौघेभ्याद्य 8, 47, 18. जयतामिव इन्दुभि: 1, 28, 5. M. 7, 201. BHAG. 2, 6. MBh. 7, 2702. im Spiele RV. 10, 34, 6. 7. — येन जयति न पराजयते AV. 4, 22, 5. 6, 98, 1. 8, 8, 24. जिगीवा कृत्रयतामा भर्ता भोजनानि 4, 23, 6. त्वन्जेषीश्रुहाश्म ÇAT. Br. 3, 6, 2, 7. सत्यमेव जयते नान्तम् MUND. Up. 3, 1, 6. siegreich sein so v. a. oben auf sein, hoch leben: स्वामी जयतु ÇĀK. 23, 11. जयतु जयतु (v. l. जयति) देव: 61, 6. 80, 21. वाष्पेण प्रतिषिद्धे ऽपि जयशब्दे जितं मया 182. जयति ते मुकृतिनो रससिद्धा: कवीश्वरा: BHART. 2, 21. PAÑKĀT. V. 12. जयति — सविता VARĀH. BRH. S. 1, 1. LAGHUG. 1, 1. जयति सत: TRIK. 1, 1, 1. जयोत् — वेपदेव: VOP. S. 176. राधामाधवयोर्जयति यमुनाकूले रक्तकेलय: Git. 1, 1. शीतोशो: किरणच्छटा इव जयत्येतर्हि तत्कृतिप: DHŪRTAS. 67, 18.

— caus. जापयति P. 6, 1, 48. 7, 3, 36. VOP. 18, 17. Jmd Etwas gewinnen machen: इन्द्रं वाजं जापयत VS. 9, 11, 12. यदि त्वध्वं व्राजं जापयेयु: ÅÇV. ÇR. 9, 9.

— desid. जिगीषति P. 7, 3, 57. VOP. 8, 73. 19, 3. gewinnen —, erlangen —, erobern —, besiegen —, siegen wollen: श्रौघो घासे जिगीषति AV. 11, 5, 18. देवान् ÇAT. Br. 1, 4, 1, 21. 5, 4, 2, 8. संग्रामम् TS. 2, 2, 4, 6. ÇĀNKH. ÇR. 14, 42, 17. 43, 1. गतिं जिगीषत: पौढा रुरुहाते ऽभिकामिकाम् Buāg. P. 2, 10, 25. (तम्) जिगाकम् । जिगीषमाणम् 8, 15, 4. पितृपैतामहे स्थानं यो यस्यात्र जिगीषते PAÑKĀT. 1, 409. जिगीषमाणा हुपदात्मजाम् MBh. 1, 7008. मर्हो जिगीषता राज्ञा 6647. ये — पुरो नृपा: । जिगीषन्ति बलात् 2, 1140. जिगीषतेर्पुधान्योऽन्यम् 3, 16390. 4, 1985. (काञ्चित्) परान् जिगीषसे 2, 194. 13, 131. नीतिरस्मि जिगीषताम् BHAG. 10, 38. Buāg. P. 3, 19, 10 (wo जिगीषास zu lesen ist). auf Beute ausgehen, med.: जिगीषसे पशुर्वाचसं सृष्ट: RV. 10, 4, 3.

— intens. जेषीयते P. 7, 3, 57. Sch.

— ऋति den Sieg davontragen über: विराडियं सुप्रजा ऋत्येषीत् AV. 14, 2, 74.